



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में चित्रित ग्रामीण परिवेश

प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे

हिंदी विभागाध्यक्ष

कला, वाणिज्य एवं कॉम्प्युटर अप्लीकेशन,

महिला महाविद्यालय, डोंगरकठोरे, ता. यावल जि. जळगाव (महाराष्ट्र)

मो. 9422462800, Email- ravindrakhare78@gmail.com

प्रस्तावना :-

भारत एक कृषि प्रधान देश कहा जाता है। भारत की ८० प्रतिशत जनता ग्रामों में निवास करती है जिनका मुख्य व्यवसाय खेती तथा खेती से जुड़े पशुपालन आदि हैं। इसलिए भारत की समस्त संस्कृति में ग्राम्य जीवन के दर्शन होते हैं। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का विकास पूर्ण रूप से केवल ग्रामों में ही दिखाई देता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, अतः साहित्य में सर्वदा ग्रामीण झलक देखने को मिलती है। आम तौर पर देखा जाय तो अधिकांश कवि गाँव की मिट्टी से जुड़े होने के कारण उनकी रचनाओं में ग्रामीण चित्रण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

प्रगतिशील विचारधारा के वरिष्ठ कवि केदारनाथ अग्रवाल ने उत्तरप्रदेश जिला बाँदा के ग्रामीण परिवेश का सूक्ष्मता से निरीक्षण-परिष्करण एवं अध्ययन करके उसे अपने काव्य में चित्रित किया है। ग्रामीण जीवन की बुनियादी समस्याओं को अपने काव्य का विषय बनाया है। कवि ने अपनी छोटी-छोटी कविताओं में किसान जीवन की पीड़ा, त्रासदी, आर्थिक अभावग्रस्तता, ऋण की समस्या, विवशता आदि का मार्मिक शैली में वर्णन किया है। सामाजिक कुरीतियाँ, रीतिरिवाज, एवं सामंती शोषण के विरोध में सार्थक आवाज उठायी है। इस शोषणवादी व्यवस्था में किसान एवं श्रमिक सबसे अधिक पीड़ित, शोषित हैं। कवि ने ग्रामीण लोगों की पीड़ा को अपने काव्य में उतराने को अपना दायित्व माना है।

उद्देश्य :-

- १) विवेचित शोधालेख के द्वारा केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में चित्रित ग्रामीण परिवेश की परंपरा एवं रीतिरिवाजों से परिचित कराना।
- २) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में चित्रित ग्रामीण जीवन के संघर्षों, अभावों और शोषण को उजागर करना।
- ३) केदारनाथ अग्रवाल की काव्य में ग्रामीण परिवेश के कृषकों, खेतिहर श्रमिकों और शोषितों की दयनीय स्थिति तथा उनके संघर्षों से अवगत करवाना।

विषय विवेचन :-

प्रस्तुत शोधालेख के द्वारा केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में ग्रामीण परिवेश का चित्रण हुआ है, जिसमें १) गरीबी एवं निर्धनता २) कृषकों और श्रमिकों का स्थिति ३) रीतिरिवाज एवं परंपरा ४) आर्थिक विषमता ५) कर्ज की समस्या इन प्रमुख मुद्दों पर विवेचन किया जायगा।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

१) गरीबी एवं निर्धनता :-

भारतीय किसानों की खेती पूर्णता: प्रकृति पर निर्भर होती है। प्राकृतिक प्रकोप के कारण किसान एवं श्रमिकों को गरीबी एवं निर्धनता का जीवन जिने के लिए विवश होना पड़ता है। प्राकृतिक अनुकूलता के बावजूद साहूकारों एवं पूंजीपतियों के ऋण के कारण किसानों को निर्धनता एवं आर्थिक अभावों की समस्या से जूझना पड़ता है। केदरनाथ अग्रवाल अपने गाँव से सच्चा लगाव रखते हैं, उनका यह लगाव यह प्रेम गाँव की वास्तविक स्थिति को व्यक्त करने के लिए बाध्य करता है। ग्रामीण किसान निर्धनता का जीवन जिने के कारण सबसे अधिक पीड़ित हैं उनकी पीड़ा प्रेमचन्द के होरी के समान है। जो दिन-रात परिश्रम करने के बावजूद अपनी स्थिति में सुधार नहीं है। किसानों का जीवन कठिनाइयों की एक अंतहीन दास्ताँ है। कवि अपनी कविता 'गुलमेहंदी' में सजीव चित्रण करते हैं –

“मेरे खेत में हल चलता है,
फाड़ कलेजा गड़ जाता है,
तड़-तड़ धरती तड़काता है,

राह बनाता बढ़ जाता है,

मेरे खेत में हल चलता है।”१

इस प्रकार कवि अपने गाँव की मिट्टी से जुड़े होने के कारण बार-बार अपनी कविताओं में बुंदेलखंड की धरती का वहाँ के किसानों की कड़ी मेहनत का यथार्थपरक चित्रण करते हैं। 'धनाभाव' कविता के माध्यम से कवि अपने जीवन से जुड़े अनुभव तथा बाँदा निवासियों के जीवन की सच्चाई को उजागर करते हैं। डाकिया जब दरवाजे पर वी.पी.साथ लाया किन्तु वी.पी.छुड़ाने के लिए उनके पास पैसा नहीं है। इसलिए उन्हें विवशता से डाकिया को अगले दिन आने को कहना पड़ता है। उस दिन कवि की सारी उर्जा शक्ति सामर्थ्य नष्ट हुआ। इतनी विद्या प्राप्त करने के बावजूद यदि अपमान सहना पड़े तो इससे ज्यादा पीड़ा कौनसी हो सकती है कवि के शब्दों में –

“मैं मनुष्य हूँ

लेकिन रुपयों के आभाव में

महामूर्ख हूँ,

मेरी विद्या काम न आयी

मेरा जीवन निष्फल लगता।”२

कवि आशावादी बनकर इस इंतजार में है कि जाने कब दुनिया बदलेगी और जाने कब धन का आभाव खत्म होगा। आज भी भारतीय जनता अच्छे दिन की आस लगाये बैठी है। कवि अपनी लोकप्रिय रचना 'रोटी' और 'छोटी सी तनख्वाह' के माध्यम से कहते हैं कि जब -जब रोटी पर संकट आता है तब-तब भूखा व्यक्ति विद्रोह करता है। 'छोटी सी तनख्वाह' में कवि अपने अनुभव से कहता है, कम तनख्वाह में परिवार चलाना कितना मुश्किल होता है। उन्होंने जब इन्द्रियबोध से जीवन और जगत को सूक्ष्म दृष्टि से देखा तब उन्होंने पाया कि यहाँ कुछ भी नया नहीं है, वही



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

पुरानी हेर – फेर की प्रथा का प्रचलन देखा, शासन कि शोषणवादी नीति देखी, शोषण से उत्पन्न पीड़ा देखी, निर्धनता और गरीबी हर झोपड़ियों की मायूसी हैं। ‘सब कुछ देखा’ कविता में कवि झोपड़ियों की और महलों की वास्तविकता को उजागर करते हैं-

“अपनेपन का पीडन देखा
झोपड़ियों को रोते देखा
अठमहलों को हँसते देखा
जाली मालामाली देखी

कंगाली बदहाली देखी।”३

२) कृषकों और श्रमिकों की स्थिति :-

भारतीय ग्रामों के कृषकों और श्रमिकों का शोषण, दुःख, पीड़ा निरंतर साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त की हैं। ग्रामीण जीवन का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि, शोषक अपने स्वार्थ को पुरा करने के लिए श्रमिकों का शोषण पशुओं के समान काम करवाकर भी उचित मूल्य नहीं देते हैं। यह शोषणवादी प्रवृत्ति ग्रामीण समाज के लिए लगा घोर अभिशाप हैं। इस अभिशाप को समाज से मुक्त करने के लिए कवि ने जनसमाज को जागृत करना चाह हैं। किसान तथा श्रमिक शोषित वर्ग के पक्ष को लेकर शोषकों के विरोध में आवाज उठाते हैं। तथाकथित सेठ, साहूकार, जमींदार पूंजीपतियों के अन्याय - अत्याचार को उन्होंने समाज के सामने लाने का प्रयास किया हैं।

ग्रामीण जीवन से जुड़े कवि केदारनाथ अग्रवाल ग्रामों की विपदाओं तथा समस्याओं से भलिभांति परिचित हैं। उनके काव्य में यथार्थवादी चित्रण की झलक मिलाती हैं। ‘चंदु’ कविता में चंदु जैसे अन्य कई ग्रामीणों की दीन-हीन जीवन का वास्तविक चित्रण किया हैं। ‘दीन कुनबा’ नामक कविता में उन्होंने ग्रामीण परिवार की दीन दुखी अवस्थाओं का मार्मिक एवं यथार्थ शैली में चित्रण करते हैं –

“दीन-दुःखी यह कुनबा
जाड़े की थरथर में काँपता
अपनी चौपारी में बैठा
ताप रहा हैं कोड़ा।”४

यह स्पष्ट हैं कि, कवि का हृदय ग्रामीण जीवन की श्रमिक वर्ग की आर्थिक विषमताओं तथा दयनीय स्थिति को देखकर द्रवित हुआ हैं। पूंजीवादी सभ्यता और संस्कृति से जन्मे उस युग की विषमताएँ और उत्पीडन को नष्ट करने का उद्देश्य कवि का रहा हैं। इसलिए कवि ने श्रमिकों और कृषकों को अपने काव्य का प्रमुख विषय बनाया हैं। ‘युग की गंगा’ काव्यसंग्रह की अधिकांश कविताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि, जिसमें ग्रामीण जीवन के वैषम्य के दृश्य को यथार्थ की अनुभूति प्रदान की हैं। युग की गंगा पाषणों - चट्टनों को तोड़कर नयी बस्तियाँ, शांति निकेतन तथा नया संसार निर्माण करेंगी, ऐसा कवि भरोसा हैं। नवयुग की यह गंगा सूखी खेती को सींचकर भूखी प्यासी, दुर्बल-निर्बल धरती को हराभरा कर देगी।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

भारतीय कृषक और श्रमिक दिन -रात कड़ी मेहनत करने के बावजूद अपने परिवार को खुशहाल जीवन देने में असमर्थ हैं। क्योंकि शोषक पूँजीपति उसके श्रम का लाभ उठाते हैं किन्तु उचित दाम नहीं देते है कवि के शब्दों में –

“हमारी जिन्दगी के दीन

बड़े संघर्ष के दीन हैं।

हमेशा काम करते हैं

मगर कम दाम मिलते हैं।”^५

इससे स्पष्ट होता है कि, पूँजीपतियों ने हमेशा कृषक और श्रमिकों का शोषण ही किया इसका परिणाम स्वरूप उनको अभाव भरा जीवन जिने के लिए विवश होना पड़ा है।

३) रीतिरिवाज एवं परंपरा :-

ग्रामीण समाज में परंपरा, प्रथा, रीतिरिवाजों का विशेष महत्व रहा है। आचार-विचार, वेशभूषा, रहन-सहन तथा व्यवहार में ग्रामीण रीतियाँ देखने को मिलती हैं। भारतीय ग्रामीण परिवेश में रीति-रिवाज, मान्यताएँ, प्रथाएँ और परंपराओं में आज भी प्रासंगिकता अधिक दिखाई देती हैं। क्योंकि उनमें सामाजिक बंधन, सांस्कृतिक पहचान और जीवन के विभिन्न पहलुओं का मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। ग्रामीण परिवेश में कुछ परंपराएँ जैसे की अतिथियों का सम्मान करना, अभिवादन करना तथा स्वास्थ्य-कल्याण की बात करना आज भी आधुनिक समाज की प्रासंगिकता हैं। आज भी हम देखते हैं कि कुछ परंपराओं में परिवर्तन आ रहा है तो कुछ लुप्त हो रही हैं। फिर भी कई परंपराएँ ग्रामीण क्षेत्र में भारतीय संस्कृति को आकार देती हुए ग्रामीण समुदाय को एक साथ लाने में साहयता कर रही हैं।

कवि केदारनाथ अग्रवाल ‘गाँव’ नामक रचना में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए ऐसे खुशियाल गाँवों के अस्तित्व से ही देश उन्नति का राह पर चलेगा। गाँव समग्र भूमि का भूषण होता है। गाँव में आनंद, अलोक नविन उर्जा, चहल-पहल इन सबसे गाँव समृद्ध होता है। कवि के सपनों का गाँव स्वर्ग होगा, जिसमें उच्च अथवा निम्न श्रेणी का कोई वर्ग नहीं होगा। समकालीन ग्रामीण समाज में विभिन्न प्रथाएँ, परंपराएँ तथा रीतिरिवाज प्रचलित रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में जमींदार प्रथा, बालविवाह, दहेजप्रथा, सतीप्रथा, जातीय भावना, पुनर्जन्म एवं भाग्यवाद आदि। जिसमें भिन्न-भिन्न प्रथाओं के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में उन्नति की अपेक्षा करना उचित नहीं समझते हैं। भाग्य तथा तक्रदीर को महत्व देना ग्रामीण लोगों की विशेषता रही है। उन पर होनेवाले अन्याय - अत्याचार, शोषण, विषमता, धार्मिकता तथा भाग्यवाद को मानकर उसे भोगना कर्तव्य समझा जाने लगा।

कवि ने भाग्यवाद -पुनर्जन्म जैसी भावनाओं पर तीव्र प्रहार करते हुए आदमी के सत्य, ज्ञान, यथार्थ तथा कर्मण्यता को विशेष महत्व दिया है। भारत में यह मान्यता प्रचलित है कि, एक जन्म के बाद दूसरा जन्म पाने की संकल्पना ‘पुनर्जन्म’ कहलाती है। किन्तु प्रगतिशील कवि केदारनाथ इस थोथी मान्यताएँ एवं सड़ी-गली परंपराओं को भ्रामक मानते हैं। कवि ‘बल्ब का फ्यूज होना’ शीर्षक से लिखते हैं –

“बल्ब का

फ्यूज होना



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

आदमी का मरना हैं ...

न लौटकर आना हैं

न पुनर्जन्म पाना हैं।” ६

कवि का मानना है कि ‘पुनर्जन्म’ जैसी मान्यताएँ पाखण्ड हैं। एक बार कोई व्यक्ति अपना देह छोड़ेगा तो लौटकर नहीं आता है। कवि ने ‘किसनी गाना’ रचना में जमींदारी प्रथा को जड़ से उखाड़ने का तथा ग्रामीण जनता को जागृत करने का काम अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। कवि का मानना है कि जमीन न किसी जमींदार की है न राजा की। इस पर उस किसान का अधिकार है जो कड़ी धूप में कंधे पर हल जोतकर धरती की कोख में बीज बोता है। जमींदार धोखे से किसानों की जमीन हथिया लेते हैं। ‘मेरा गाँव’ कविता में कवि ने ग्रामीण परिवेश में बालविवाह जैसी प्रथाओं का चित्रण किया है। बालविवाह ग्रामीण लोगों की अशिक्षित एवं अज्ञानता का प्रतिफल है। इसका भोग कम उम्र की कन्याओं को भोगना पड़ता है-

“अनुकम्पा पाकर कन्याएँ माँ बनती हैं

नवयुवती होने से पहले सूत जनती हैं।” ७

४) आर्थिक विषमता :-

भारतीय समाज व्यवस्था में विषमता का मूल आधार ‘अर्थ’ है। आर्थिक आधार पर समाज के तिन वर्ग किए जा सकते हैं जिसमें उच्च -मध्य -निम्न आदि हैं। उच्च वर्ग में पूँजीपति, सेठ साहूकार तथा जमींदार आते हैं। मध्य वर्ग में नौकरी पेशा व्यक्ति और निम्न वर्ग में कृषक और श्रमिक वर्ग आता है। आर्थिक विषमता ही सब समस्या का मूल कारण है। ‘पैसा है मेरा देश’ रचना में आर्थिक विषमता को उजागर करते हुए कवि ने यहाँ कुछ लोगों की जेब में पैसा है तो कुछ लोगों की जेब खाली है। ‘रुष्ट हैं अन्न की देवी’ और ‘भिखारिन’ शीर्षक रचनाएँ भी भारतीय आर्थिक विषमता को व्यक्त करती हैं। एक ओर पूँजीपतियों के सुविधा के लिए जिने वाले निर्धन और श्रमिक व्यक्ति हैं, तो दूसरी ओर धँसी-धँसी आँखों से थके हुए पाँवों से चलनेवाले भिखारी हैं जो घर-घर जाकर रुखी -सूखी भीख मंगाकर खाते हैं। आज हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था का दीन-हीन दशा है।

‘पैसा’ शीर्षक से रचना में कवि कहते हैं कि पैसा ही सर्वशक्तिमान है, पैसा की वजह से व्यक्ति हर अपराध करने में संकोच नहीं करता है। पैसों की तुलना में इन्सान की इंसानियत को कोई महत्व नहीं है -

“सिर पर चढ़ा पैसा

सिध्द और सर्वशक्तिमान हैं

जमीन पर गिरा आदमी

दीन-हीन परेशान हैं।” ८

कवि ने आर्थिक विषमता को स्पष्ट करते हुए मानवीय जीवन में धन अपेक्षा मानवीय मूल्य तथा नैतिक मूल्य कई अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। समाज की इस विपरीत व्यवस्था में एक ओर धनवान व्यक्ति अधिक अमीर होता जा रहा है तो दूसरी ओर गरीब और गरीब हो गया है। ग्रामीण परिवेश में गरीब कृषक एवं श्रमिक कठोर परिश्रम करने के बावजूद अधपेट रहने के लिए मजबूर



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

हैं। उनकी मूलभूत जरूरतें भी पूरी नहीं हो पाती हैं। रोटी के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। इसीलिए कवि सामाजिक एवं आर्थिक विषमता के घोर विरोधी हैं। 'अभिशाप जग का' कविता में कवि इस तथ्य को व्यक्त करते हैं -

“एक रोटी के लिए तडपे सदा अधपेट खाए

दूसरा घी-दूध, शक्कर का मजा भरपेट पाए

मैं इसे विधि का नहीं, अभिशाप जग का जानता हूँ।”९

स्पष्ट है की कवि इसे विधि का विधान नहीं मानते हैं बल्कि यह जग का घोर अभिशाप मानते हैं। एक वर्ग खून पसीने से कड़ी मेहनत करता तो दूसरा उसी मेहनत का फल असानी से प्राप्त करता है। एक के पास पहनने के लिए ढंग का कपड़ा नहीं ओर दूसरा बहु वस्त्रों का उपभोग करता है। कवि इस विषमता का खंडन करते हुए ऐसे रामराज्य को कवि आग लगाने की बात करते हैं-

“आग लगे इस रामराज्य में

रोटी रूठी कौर छिना हैं

थाली सूनी, अन्नबिना हैं

पेट धँसा हैं रामराज्य में।”१०

५) कर्ज की समस्या :-

ग्रामीण जीवन में कृषक को हमेशा प्रतिकूल परिस्थिति के कारण साहूकार तथा जमींदारों से 'कर्ज' लेना पड़ता है। कर्ज लेना मानों अपने संपूर्ण जीवन को गुलामी के साथ जीना होता है। आर्थिक विपन्नता के कारण कृषक, खेतिहर मजदूर आदि को जमींदार, साहूकार या पूंजीपतियों से कर्जा लेना पड़ता है, कर्जा लेना उनकी विवशता है। कभी खाने-पीने के लिए, कभी नामकरण, मुंडन तथा विवाह, बिमारियों के समय, तो कभी परिवारजनों के अंतिम संस्कार के लिए तथाकथित सेठ साहूकार, जमींदारों के सामने हाथ जोड़ने पड़ते हैं। यही कर्ज के ब्याज पर जमींदार-साहूकार बड़े होते हैं। कवि ने अधिकतर रचनाओं में कर्ज की समस्या को उजागर किया है। 'कर्ज की मार' कविता में कवि प्रचलित जमींदारी प्रथा का तीव्र शब्दों में विरोध करते हैं-

“यह उधार खाते का जीवन

बढ़े ब्याज का बोझा लादे

रामराज्य की नई सड़क पर

पाँव उठाए डगमग चलता।”११

इससे स्पष्ट है कि गाँवों की इस समस्या ने सामाजिक स्वास्थ्य बिगाड़ दिया है। जमींदार, साहूकारों के कारण रामराज्य की यह नई सड़क डगमगा रही है। आर्थिक आभाव में जीनेवाले ग्रामीण लोग निरंतर कर्ज में डूबे जा रहे हैं। सूद पर सूद मिलने से जमींदार मोटे होते जा रहे हैं। कर्ज की समस्या का सजीव चित्रण कवि करते हैं -

“कर्ज का पहाड़

बड़े से बड़े मर्ज से बड़ा है

न मरा आदमी

पहाड़ से मरा पड़ा है।”१२



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

‘आग का आईना’ संकलन से एक कविता में कर्ज की समस्या पर कवि ने कर्ज चुकानेवाला व्यक्ति जीवन में कितना मजबूर हैं। इसका उदाहरण देते हुए कवि कहते हैं कि कर्ज ने संपूर्ण ग्रामीण समाज को निगल लिया है। कर्ज से कोई नहीं बच पाया है –

“कर्ज-कर्ज-कर्ज

मारे नहीं मरता कर्ज
मरता हैं मारे बिना

आदमी का कर्ज |”१३

इस प्रकार कवि केदारनाथ अग्रवाल ने गाँव के महाजन के इस ‘शोषण कांड’की जड़ों में उतरकर हमें आर्थिक मजबूरियों का चेहरा दिखाया है, जो सदियों से ग्रामीण लोगों को पीसता आया है। शोषण और गरीबी का यह पहिया अगर आज भी हमें पीसता है, तो उसके लिए हम कही -न -कही जिम्मेदार हैं जो अपने सुख -स्वार्थों की लालच में लुप्त हैं।

निष्कर्ष :-

हिंदी के प्रगतिशील कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में चित्रित ग्रामीण परिवेश की दृष्टि से अध्ययन करने के उपरांत हम इस निष्कर्षात्मक बिंदुओं तक पहुंचे हैं –

- १) प्रगतिशील काव्यधारा के कवि केदारनाथ अग्रवाल गाँव की मिट्टी से जुड़े होने के कारण उनकी प्रत्येक कविताओं में ग्रामीण जीवन में पनप रही शोषणवादी व्यवस्था का विरोध तथा शोषितों का पक्ष लेकर क्रांति की भावना जनमानस में जगाने का प्रयास किया है।
- २) ग्रामीण परिवेश में प्राकृतिक अनुकूलता के बावजूद भी जमींदार, साहूकार, तथा पूँजिपतियों के शोषणवादी वृत्ति के कारण किसान और मजदूरों को गरीबी एवं निर्धनता का जीवन जिने के लिए विवश होना पड़ा है।
- ३) कवि ने कृषक और खेतिहर श्रमिकों का अपने काव्य में प्रमुख स्थान देकर उनकी दयनीय स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है।
- ४) कवि ने ग्रामीण जीवन से जुड़ी प्रथाएँ, परंपराएँ एवं रीतिरिवाजों को अपने कविताओं के माध्यम से चित्रित करके विभिन्न प्रथाएँ तथा मान्यताओं का तीव्र विरोध भी किया है।
- ५) गरीब किसान और मजदूर कड़ी मेहनत करने के बावजूद जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं तक को नहीं जूटा पाता है इसके विपरीत जो वर्ग सूदखोरी, मुनाफाखोरी करके सुख -सुविधाओं से जीवन जिते हैं। इसी आर्थिक विषमता का वास्तविक चित्रण उनके काव्य में मिलता है।
- ६) ‘कर्ज की मार’ रचना के माध्यम से कवि ने आर्थिक विपन्नता में जिने वाला कृषक एवं श्रमिक मजबूरन गाँव के सेठ साहूकार, जमींदारों से कर्ज लेने के लिए किस प्रकार विवश होता है इसका प्रमाणिक चित्रण किया है।

संदर्भ सूची :-

- 1) अग्रवाल केदारनाथ, गुलमेहंदी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.१९७८, पृ.६७



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2

ISSN No: 3049-4176

- 2) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), बसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९९३, पृ.९४
- 3) अग्रवाल केदारनाथ, खुली आँखे खुले डैने, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९९३, पृ.६३
- 4) अग्रवाल केदारनाथ, गुलमेहंदी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद,प्र.सं.१९७८, पृ.५४
- 5) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), कहें केदार खरी -खरी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९८३, पृ.३०
- 6) अग्रवाल केदारनाथ, बोल-बोल अबोल, परिमल प्रकाशन, इलाहबाद,प्र.सं.१९८५, पृ.७१
- 7) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), कुह की कोयल खड़े पेड़ की देह, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९९७, पृ.२४४
- 8) पूर्ववत्, पृ.१७६
- 9) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), बसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९९३, पृ.६६
- 10) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), कहें केदार खरी -खरी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९८३, पृ.८१
- 11) अग्रवाल केदारनाथ (सं.अशोक त्रिपाठी), बसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद ,प्र.सं.१९९३,पृ.८२
- 12) अग्रवाल केदारनाथ, आग का आईना, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहबाद,प्र.सं.१९७८, पृ.४५
- 13) पूर्ववत्, पृ.६७